हिंदू धर्म में अग्नि को साक्षी मानकर धार्मिक कार्य करने की परंपरा है। नवरात्रि के दौरान भी जो अखंड ज्योति हम जलाते हैं वह आपके संकल्प, व्रत, पूजा और सभी धार्मिक अनुष्ठानों की साक्षी होती है। साथ ही यह माता के प्रति भक्तों की साधना का भी प्रतीक होती है। अत्यंत पवित्र होने के कारण अखंड ज्योति को जलाने के कई लाभ होते हैं। कहते हैं कि इसे जलाने से हर प्रकार की नकारात्मकता दूर होती है और घर में सुख-शांति का प्रवेश होता है। अखंड ज्योति जलाने से घर का वातावरण भी शुद्ध होता है और समृद्धि में वृद्धि होती है।

नवरात्रि अखंड ज्योति नियम और विधान

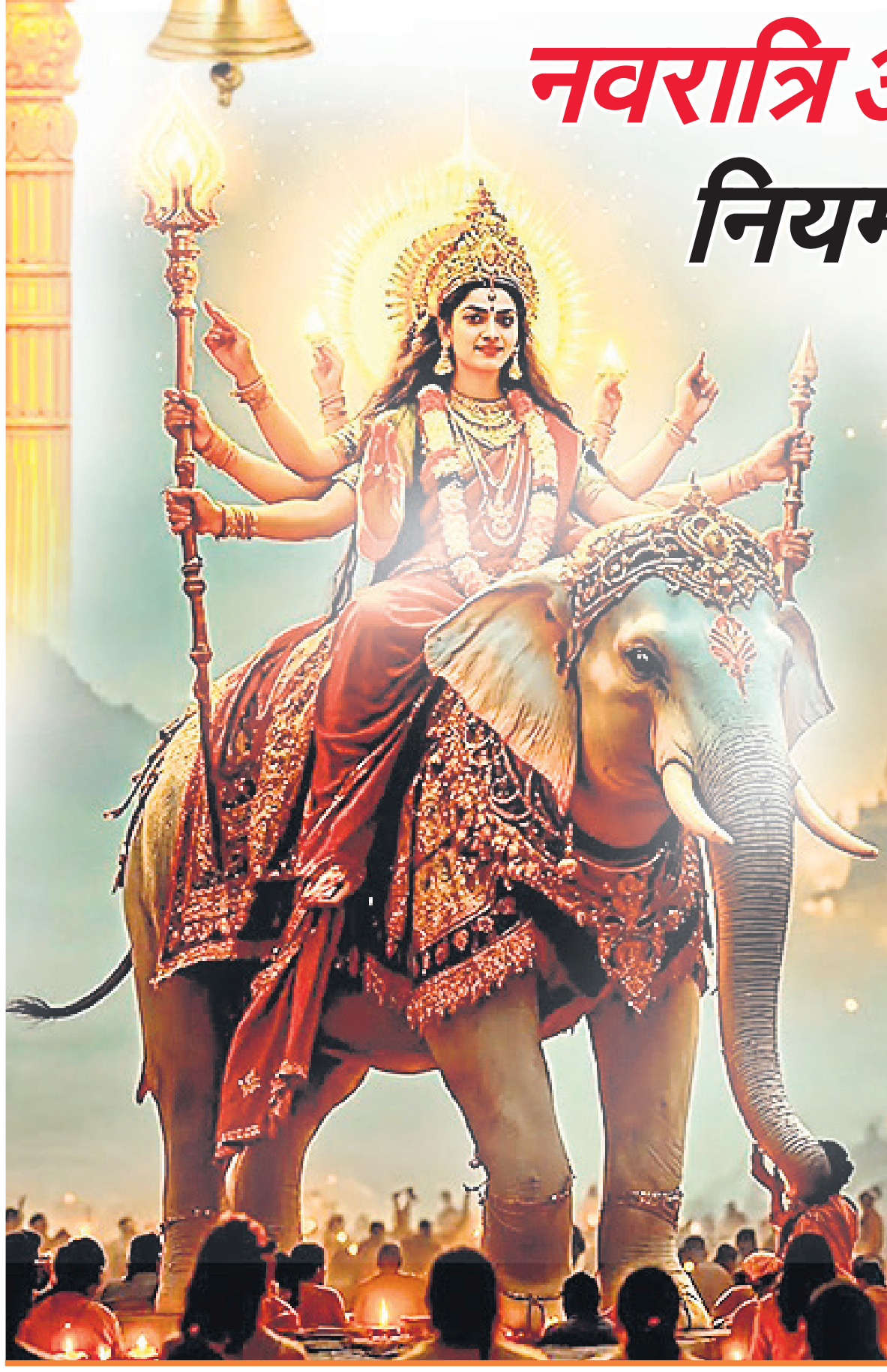

डॉ. विपिन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

अखंड ज्योति की स्थापना विधि

जो चौकी आपने माता की प्रतिमा के लिए स्थापित की थी, उसी पर अखंड ज्योत की भी स्थापना की जाएगी। अखंड ज्योति की स्थापना के लिए सबसे पहले अष्टदल यानी आठ पंखुड़ियों वाले फूल का आसन बनाएं। आप चाहें तो अक्षत को हल्दी या लाल रंग से रंग भी सकते हैं। इस अष्टदल को आप सीधे चौकी पर भी बना सकते हैं और किसी पात्र में भी बनाकर, उसके ऊपर भी अखंड ज्योत स्थापित कर सकते हैं। अब इस अष्टदल पर दीपक को रखें। आप अखंड ज्योत जलाने के लिए मिट्टी या फिर तांबे के दीपक का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके बाद आप दीपक में बाती डालें और गाय का शुद्ध घी डालें। घी के अलावा आप शुद्ध तिल के तेल का भी उपयोग कर सकते हैं।

ऐसी मान्यता भी है कि अगर दीपक घी का है तो उसे माता के दाएं तरफ जलाया जाता है और अगर दीपक तेल का हो तो उसे बाएं ओर जलाया जाता है। अगर आप मिट्टी के दीपक का प्रयोग कर रहे हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि उसमें बाती का मुख माता की तरफ यानी पूर्व दिशा में होना चाहिए। अगर दीपक तांबे का है तो उसमें बाती का मुख हमेशा सीधा ही होता है।

अखंड ज्योति मंत्र

भो दीप देवस्वरुपस्त्वं कर्म साक्षी सविघ्नकृत। यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्वं सुस्थिरो भव ॥ अर्थात् जब तक व्रत समाप्त न हो, तब तक आप स्थिर रहे। इस प्रकार पूजन स्थल पर अखंड ज्योत प्रज्वलित हो जाएगी। अब आप दीपक को तिलक लगाएं और उन्हें अक्षत, पुष्प, रोली, मौली और भोग अर्पित करें। साथ ही आप अपनी भूल चूक के लिए माफी मांगे और उनसे यह प्रार्थना करें कि वह इसी प्रकार नौ दिनों तक जलते रहें। माता जी से भी दीपक की रक्षा की प्रार्थना करें। बाती की लंबाई का भी विशेष ध्यान रखें, यह इतनी बड़ी होनी चाहिए कि नौ दिनों तक निरंतर जलती रहे। कहते हैं कि अखंड ज्योत में सवा हाथ की बाती का प्रयोग करना चाहिए यानी उसकी लंबाई आपके हाथ से लेकर कोहनी के थोड़ा ऊपर तक होनी चाहिए।

भूलवश दीपक बुझ जाए तो क्या करें

हमें यथाशक्ति दीपक को जलाए रखने का प्रयास करना चाहिए। यदि फिर भी वह बुझ जाए तो माता रानी से क्षमा मांगकर अखंड ज्योत को दोबारा प्रज्वलित कर लेना चाहिए। इसके बाद देवी अपराध क्षमापन स्तोत्र का पाठ कर लेना चाहिए। माता रानी तो जग जननी हैं, वह अपने भक्तों द्वारा अनजाने में हुई गलतियों को क्षमा कर देती हैं।

क्या हैं नियम

आप अगर मिट्टी का दीपक जला रहे हैं तो यह जरूर सुनिश्चित कर लें कि वह दीपक खंडित न हो। ऐसा माना जाता है कि टूटे हुए दीपक को जलाने से घर में दरिद्रता आती है। अखंड ज्योति की स्थापना के बाद रोज माता के साथ दीपक का भी पूजन करें। पूजा के समय अखंड ज्योत को भी पूजन सामग्री और भोग अवश्य अर्पित करें। इसके साथ ही, इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि एक बार अखंड ज्योत जलाने के बाद घर को पूरी तरह से बंद नहीं करना होता है। साथ ही अखंड ज्योति जलाने के बाद घर में किसी न किसी सदस्य का होना जरूरी होता है। अगर आप अकेले रहते हैं या फिर काम से बाहर जाते हैं तो किसी मंदिर में इसका स्थापना करवा सकते हैं, लेकिन इसे अकेला कदापि न छोड़ें।

पौराणिक कथा

मां दुर्गा ने तोड़ा देवताओं का घमंड

एक बार देवताओं और दैत्यों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में देवता विजयी हुए। युद्ध जीतने से उनके मन में अहंकर उत्पन्न हो गया। सभी देवता स्वयं को तीनों लोकों में सबसे श्रेष्ठ मानने लगे। जब माता दुर्गा ने देवताओं को इस प्रकार अहंकार से ग्रस्त होते हुए देखा तो वे तेजपुंज के रूप में देवताओं के समक्ष प्रकट हुईं। माता का इतना विराट तेजपुंज रूप देखकर देवता भी घबरा गए। तेजपुंज का रहस्य जानने के लिए इंद्रदेव ने वायुदेव को भेजा। अहंकार में चूर होकर वायुदेव तेजपुंज के समीप पहुंचे। तेज ने उनसे उनका परिचय पूछा। वायुदेव ने कहा स्वयं को प्राणस्वरूप तथा अतिबलवान देव बताया। तेजस्वरूप माता ने वायुदेव के सामने एक तिनका रखा और कहा कि यदि तुम सचमुच इतने श्रेष्ठ और बलवान हो तो इस तिनके को उड़ाकर दिखाओ। समस्त शक्ति लगाने के बाद भी वायुदेव उस तिनके को हिला तक नहीं पाए। वायुदेव ने वापस आकर यह बात इंद्र को बताई। तब इंद्र ने अग्निदेव को उस तिनके को जलाने के लिए भेजा, लेकिन अग्निदेव की असफल रहे। यह देख इंद्रदेव का अभिमान चूर-चूर हो गया। इसके उपरांत उन्होंने उस तेजपुंज की उपासना की तब तेजपुंज से माता शक्ति का स्वरूप प्रकट हुआ। माता ने इंद्र को बताया कि मेरी ही कृपा से ही देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त की है। इस प्रकार झूठे अभिमान में आकर तुम सब देवता अपना पुण्य नष्ट मत करो। देवी के वचन सुनकर सभी देवताओं को अपनी गलती का अहसास हुआ और सभी ने मिलकर मां दुर्गा की उपासना की।

धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत का पर्याय रायपुर मेला

अयोध्या का रायपुर मेला धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का पर्याय है। महीने भर के लिए यहां उपनगर बसता है। यह शताब्दी भर से गांव और शहर की सांझी विरासत को सहेज अगली पीढ़ी तक पहुंचा रहा है। मेले में धुर गांव की जरूरत के सामान से लेकर शहरों के शो-रूम में बिकने वाले सामान मौजूद हैं। मेला, प्रदेश में इमारती लकड़ी के लिए प्रसिद्ध है। सहारनपुर, बाराबंकी, कानपुर आदि जिलों से लकड़ी की दुकाने यहां सजती हैं। लाखों का कारोबार होता है। शहरी युवाओं के शरीर पर दिखने वाले टैटू यहां गांव के लोगों के लिए गोदना है। जलेबी और कचालू से महंगी मिठाइयां, तरह-तरह के गुब्बारे बच्चों और युवाओं के लिए तरह-तरह के झूले और मनोरंजन के लिए सर्कस और मौत के कुंए का आनंद लेने के लिए इसी जिले के नहीं आसपास के जिलों के लोग भी यहां पर पहुंचते हैं।

-राजेंद्र पांडेय, अयोध्या

रायपुर मेला लोगों की आस्था का एक जीता जागता उदाहरण है। यह श्रीहरि विष्णु के अनंत स्वरूप का पूजनस्थल भी है। अनंत चौदस (अनंत चतुर्दशी) से शुरू होने के पीछे एक धार्मिक मान्यता है। पौराणिकता है। धार्मिक अनुष्ठान के साथ ही मेला शुरू होता है। इस बार के मेले का प्रबंधन देख रहे जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन धर्मेंद्र प्रताप सिंह टिल्लू इसके पौराणिक महत्व को रेखांकित करते हुए बताते हैं कि बहुत वर्षों पहले रायपुर गांव और उसके आसपास के ग्रामों में बारिश न होने के कारण भयंकर सूखा पड़ गया। गांव के लोग यहां स्थित भगवान अनंत के मंदिर में रहने वाले पुजारी के पास आए। समस्या बताई। पुजारी ने सीताराम जप व यज्ञ करने के लिए कहा। गांव वालों के सामूहिक प्रयास से विधि-विधान से पूजन प्रारंभ हुआ। कुछ समय बाद अनंत चौदस के दिन मूसलाधार बारिश हुई। चारों और खुशी की लहर दौड़ पड़ी। इसी के साथ हर वर्ष यहां अनंत चतुर्दशी के दिन रायपुर मेले की शुरूआत हो गई।

रायपुर मेले का इतिहास

- रायपुर मेले का इतिहास शताब्दी भर से ज्यादा का है। टिल्लू बताते हैं कि मेले को लगते 119 वर्ष हो गए। उनसे पहले मेले का प्रबंधन उनके बड़े पिताजी वीरेंद्र प्रताप सिंह उर्फ बुढ़ऊ सिंह वर्ष 1979 से देख रहे थे। इस साल मेले के एक दिन पूर्व ही उनका निधन हो गया। इसके बाद वह व्यवस्था देख रहे है। उनके पहले बाबा शमशेर बहादुर सिंह और इसके पहले परबाबा देवकली सिंह मेले की व्यवस्था देखते थे।
- रायपुर मेला सभी उम्र के लोगों को आकर्षित करता है। यहां हर वर्ग के लोगों के लिए कुछ न कुछ होता है। इस बार के मेले में भी ऐसा ही है। बच्चों और युवाओं के लिए तरह-तरह के झूले हैं। जादूगर भारत सम्राट का जादू इंद्रजाल और मायावी मीना बाजार लुभा रहा है। बहुरूपिए आकर्षण का केंद्र हैं। मौत का कुएं की धुन दूर से सुनाई पड़ती है। हाथ पर गोदना गोदवाने के लिए पूरी लेन बनी है। एक्शन फोटो के लिए पूरा स्टूडियों है। मेले की जलेबी और बंडा की कचालू दूर से ही मुंह मे पानी ला देता है। गांव के लोगों की जरूरत के हंसिया, खुरपी से सूप तांत से कसे जाते देखे जा सकते हैं। नाई से धोबी तक की दुकाने हैं। कपड़ों के शो-रूम है तो लोहे की आलमारी, बक्से के साथ चारपाई तक यहां मिलता है।

- मेले की पहचान इमारती लकड़ी के लिए पूरा जोन है। कानपुर, सहारनपुर, बाराबंकी, गोंडा, बहराइच से लेकर पूर्वांचल तक से दुकानें आई है। इमराती लकड़ी का पूरा कारखाना स्थापित है। हर समय कारीगर काम करते हैं। खड़ाऊ से तख्त, सोफा सेट से नक्काशीदार दरवाजे और दूसरे सामानों की खरीद-फरोख्त खूब होती है। लोग साल भर मेले आने का इंतजार करते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, चाट, फल के साथ नामचीन मिठाई की दुकाने लगी हैं।
- बाराबंकी से आए लकड़ी के दुकानदार अनस बताते हैं कि उनके पिताजी के जमाने से रायपुर मेले में पूरा कारखाना लगाया जाता है। मेले में आल्हा, बिरहा जैसे देशज सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन अक्सर होता रहता है।
- भगवान अनंत के मंदिर के इर्द-गिर्द यह मेला लगभग एक किलोमीटर की परिधि में फैला है। लोग मंदिर में पूजन-अर्चन के साथ मेले की शुरूआत करते है। मंदिर से सटे सरोवर में तैराकी का आनंद लेते हैं।
- अनंत चतुर्दसी से शुरू होने वाला मेला एक महीने चलता है। इन दिनों यह शवाब पर है। शुरूआत के दिनों से नवरात्रि तक मेले की सभी दुकानें दिन-रात चलती हैं। नवरात्रि के बाद इमारती लकड़ी पर लोगों का फोकस बढ़ जाता है। भगवान अनंत की पूजा-अर्चना और प्रसाद वितरण के साथ इसके समापन की घोषणा की जाती है। इस बार मेले का समापन सात अक्टूबर को होगा।
- रायपुर मेला अयोध्या शहर से लगभग आठ किलोमीटर पहले अयोध्या-लखनऊ हाईवे पर लखनऊ से जाते दायीं ओर कोटसराय गांव से दक्षिण लगभग एक किलोमीटर दूरी पर है। ट्रेन से यहां पहुंचने के लिए मेले से करीब पांच सौ मीटर दूर अयोध्या-लखनऊ रेल मार्ग पर सालारपुर रेलवे स्टेशन पर उतरना होगा। सड़क मार्ग से लखनऊ-अयोध्या पर कोट सराय गांव से दाहिने घूमकर एक किलोमीटर चलना होगा।

बातचीत

मेला देखने पहुंचे बब्लू शर्मा कहते हैं रायपुर मेला केवल मेला भर नहीं है। साल भर बाद आने वाला मेला यहां के लिए पर्व भी है।

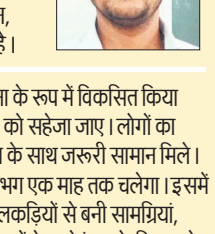

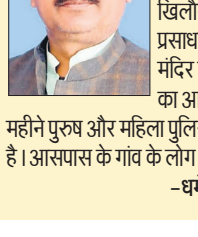

मेले विश्राम कक्ष में प्रतिभा कहती हैं कि मेले में उनकी जरूरत का हर सामान मिलता है। बच्चों हर साल मजबूर करते हैं मेले में आने के लिए।

गुड़िया बोली, यहां मेला देखने में सुविधा है कि कभी किसी के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं कर सकता है। आसपास के लोग सुरक्षा में लगे रहते हैं।सूला, सर्कस खान-पान तो है ही।

मेला देखने पहुंचे विकास कहते हैं कि इस मेले में गांव का आनंद आता है। लोग खाने पीने के साथ सरोवर में तैराकी करते है। खाने पीने के लिए शुद्ध सामानों के साथ लकड़ी का सामान खरीदने लोग ज्यादा आते हैं।

आशुतोष कहते हैं कि मेला कब से लगता है वह नहीं जानते लेकिन पूर्वांचल के जिलों की भीड़ यहां आती है। व्यवस्था अच्छी रहती है। किसी के साथ बदतमीजी नहीं हो सकती है। गांव से शहर तक के सामान, मनोरंजन सब कुछ तो मिलता है।

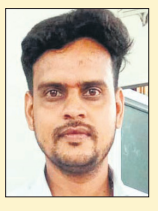

रायपुर मेले को सांस्कृतिक चेतना के रूप में विकसित किया गया। प्रयास है, ग्रामीण संस्कृति को सहेजा जाए। लोगों का मनोरंजन के साथ जरूरी सामान मिले। मेला लगभग एक माह तक चलेगा। इसमें इमारती लकड़ियों से बनी सामग्रियां, बच्चों एवं बड़ों के मनोरंजन के लिए झूले, खिलौने और महिलाओं के लिए सौंदर्य प्रसाधन के सामानों की दुकाने लगती है। मंदिर परिसर में सरोवर है। लोग तैराकी का आनंद लेते है। सुरक्षा के लिए पूरे महीने पुरुष और महिला पुलिस की पूरी एक पिकेट मौजूद रहती है। आसपास के गांव के लोग सुरक्षा में रहते हैं।

-धर्मेंद्र प्रताप सिंह टिल्लू, मेला प्रबंधक